जैनेन्द्र के स्वच्छन्द प्रेम

सिन्धु कुमारी
हिन्दी विभाग
IGNOU, पटना।

सारांश

मानसिक जगत् के केन्द्र में प्रेम और काम दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वयं जैनेन्द के शब्दों में, हमारे अन्दर अनन्त अव्यक्त है। मैल उसमें है, धौल–धवलता भी उसमें हैं। उन सबको स्वीकार करके शनैः शनैः उसे बाहर निकालकर अपने को रिक्त करते जाना– मेरे विचार में यह बड़ा काम है। इससे अलग सृजन क्या होगा, यह मैं जानता नहीं।''[1] इस अनन्त अव्यक्त को जैनेन्द ने नारी–प्रेम के माध्यम से प्रकट करना चाहा है। इसलिए प्रेम जगत् पर्याप्त विस्तृत है और साथ ही गहन भी है।

शब्द कुंजी: अनन्त, अव्यक्त, मानसिक सृजन, प्रेम जगत, कहानी, उपन्यास

जैनेन्द्र के कथा–साहित्य के प्रारम्भिक चरण में स्वच्छन्द प्रेम की प्रवृत्ति बड़ी प्रबल रही है। कहानी और उपन्यास दोनों रूप में हम इसी प्रकार देख सकते हैं। विशेषकर जैनेन्द्र की कहानी में यह प्रवृत्ति आदि से अन्त तक मिलती है। 'एक रात', 'नीलम देश की राजकन्या' आदि ऐसी अनेक कहानियाँ जैनेन्द्र के कहानी साहित्य में हैं, किन्तु उपन्यासों में यह प्रवृत्ति प्रथम और द्वितीय चरण के उपन्यासों में उल्लेखनीय ढ़ंग से रही है। इस स्वच्छता भाव के लिए जैनेन्द्र के स्त्री–पात्र इस तरह से निर्मित किए गये हैं कि वे समाज में रहते हुए भी जैसे अलग से दिखाई पड़ते रहते हैं। समाज जैसे उनके लिए सहज वास्तविकता नहीं है। यह वास्तविकता तब प्रकट होती है, जब उनके जीवन में मित्र या प्रेमी आता है।

इसके लिए जैनेन्द्र प्रायः स्त्री के प्रसंग में पति के स्थान में प्रेमी को लेते हैं। विशेषकर ऐसा प्रेमी जो कि उसका नहीं हो पाता। और दूसरी ओर हम यह भी देखते हैं कि जिस स्त्री–पुरुष में विवाह हो जाता है उनके प्रति वे संपूर्ण रूप से समर्पित नहीं हो पाते। ऐसा लगता है कि उनके जीवन में घटित कोई स्वच्छन्द प्रेम उनके मानसिक जगत् को अभिभूत किए रहता है। इसी कारण जैनेन्द्र के सभी स्त्री पात्र नाटकीय और अतिरंजित से लगते हैं, जैसे विशेषकर कट्टो, कल्याणी और सुनीता। किन्तु यदि इस स्वच्छन्तावादी प्रेम के मनोविज्ञान को हम ध्यान में रखें तो स्त्री पात्र स्वाभाविक, अतिरंजित, अपवादपूर्ण नहीं लग पायेंगे। इसके

लिए जैनेन्द्र एक विशेष मानसिक स्थिति निर्माण करते हैं, जैसे 'परख' में विशेष परिस्थिति दिखाई है कट्टो की। कट्टो विधवा है, किन्तु वह अभी मुग्धा और नवयौवना है। साथ ही सत्यधन युवक, प्रेमी हृदय तथा अपने हृदय में अनेक आदर्श रखने वाला, किन्तु समय आने पर पीछे हटनेवाला–दूसरी और एक विशेष मानसिक स्थिति को यों निर्माण करते हैं जैसे – 'परख' की कट्टो लड़की तन–मन से पढ़ रही है, पर मास्टर जी तन–मन से नहीं पढ़ा रहे हैं। वह जाने क्या देखे हैं, और फिर या सोंचते हैं।

लड़की अपनी सुलेख की कॉपी बनाकर लिखने लगी है कि उसकी इंग्लिश रीडर इन्होंने उठा ली। जो पाठ आज पढ़ना था उस सफे पर निगाह जमाते–जमाते लिखना शुरू कर दिया। छपी लाइनों के बीच–बीच में मोती से अक्षरों में लिखा – हमारी कट्टो पढ़ती है। लोग कहते हैं, वह विधवा है। हम कहते हैं वह कट्टो है और दुनिया भर से अच्छी है।''[2] इस परिस्थिति और मानसिक स्थिति में दोनों को परस्पर अवगुंठित करके जैनेन्द्र इस स्वच्छन्द प्रेम की निर्मिति करते हैं। कट्टो और सत्यधन का समीप आने और सत्यधन का कट्टो को पढ़ाने में इस स्वच्छन्द रहस्यात्मक अस्पष्ट प्रेम का विशद रूप विकसित करते हैं। एक उदाहरण देखिये – किताब को गुरूजी ने दबुका ली थी – उन्होंने क्या कसूर किया था। कितब भी कुछ ऊट–पटांग लिखने की चीज है? कट्टो ने अपने चारों तरफ किताब देख ली पर न मिली। गुरूजी ने पूछा – क्या है? उत्तर मिला हमारी रीडर। क्या हमने ले ली?'' कहाँ गई?'' देखो।'' कट्टो ने फिर देखना शुरू किया। हार–हूर कर आ खड़ी हुई–देख तो ली।'' कोई फरिश्ते थोड़े ही ले जायेंगे। फिर देखो।'' गुरूजी ने कहा और किताब कोट की तरह में सरका ली। .. .. बहुत कुछ देखा तो उसी कमरे के एक कोने में औंधी पड़ी हुई वह किताब मिल गई। कहीं तो पटक देती हो, फिर कहती हो कहाँ चली गई?'' मैंने तो संभाल के रखी थी'' बड़ी अच्छी रक्खी थी।'' ... अच्छास अब सबक शुरू करो।'' सबक शुरू हुआ। वही पन्ना खुला – हैं। ये क्या कर दिया?''[3] इसके बाद दोनों में संवाद होता है उसमें इस स्वच्छन्द प्रेम की एक अजब रहस्यमयता और स्निग्धता प्रकट होती है। सत्यधन पढ़ाते समय कहता है, हरे हरे! मैं कोई बेवकूफ हूँ!'' हम नहीं जानते। हम तो नहीं पढ़े। हमें दूसरी किताब लाके दो।'' कौन लाके दे?'' तुम।'' हम नहीं जानते।'' तो हम भी नहीं जानते।'' हम तो नहीं .....।'' तो हम भी नहीं ..... ।'' नहीं लाके देने के?'' नहीं लाके देने के।'' तो हम भी नहीं पढ़ते।'' मत पढ़ो। .... मास्टर जी ने कहा – तो यह किताब मुझे दे दो। लड़की ने कहा – तो हम नहीं देते यह तुम्हे। तुम इसका क्या करोगी?'' कभी करें।'' आखिर क्या?'' फाड़ दूँगी।'' अरे नहीं नहीं!'' .... मास्टर जी ने कहा – तुम्हारे हाथ जोडूँ मत फाड़ो मत! लड़की ने कहा – 'अच्छा जोड़ो हाथ। मास्टर साहब ने जोड़ दिए। बालिका ने अपने दोनों हाथों से जुड़े हुए हाथों को पकड़ लिया। किताब देते हुए कहा 'लो' फिर कहा – 'अच्छा अब सबक पढ़ाओ।' मास्टर जी चुपचाप सबक पढ़ाने लगे। ...''[4] आदि इस संसार में भी परिस्थिति निर्माण के अतिरिक्त जैनेन्द्र की भाव धारणा

विशेषकर स्त्री चरित्र के प्रति मूलतः रोमान्टिक है उनके रूप, सौन्दर्य, वर्णन, व्यवहार, उनकी चेष्टाएं करुण प्रेरणाएँ इन सब की कल्पना और इन सबकी निर्मिति इन्हीं रंग और रेखाओं से करते हैं जिसमें मुक्ति का आभास है।

'परख' की कट्टो में सुन्दरता नहीं है। एक–एक अवयव को गौर से देखोगे तो उसमें अनेक दोष निकाले जा सकते हैं पर वह इन सबसे निश्चिन्त है, और समझती है, वह असुन्दर नहीं है, रंग उतना उजला नहीं जितना सांवला है।''[5] इसके आगे वे इस कट्टो के रूप सौन्दर्य के उन रहस्यमय बिन्दुओं की ओर जैसे संकेत करते हैं कि लगता है कि कट्ओ का निर्माण इस तरह के प्रेम के लिए ही हुआ है। कट्टो की आँखों में कुतूहल मिलता है औत्सुक्य है, हरियाली है, सब निमन्त्रण है, सब चेतावनी है और इसके साथ ही एक ऐसी चमक है जैसे मानो स्त्रीत्व छनकर इन आँखों में भर गया है।[6] प्रेम का प्रारम्भिक रहस्यात्मक आकर्षण और स्वच्छन्द प्रेम की भावना और स्थिति को जैनेन्द्र के उपन्यासों में स्त्री चरित्र के माध्य से विशेष्रूा प्रकार मानव मूल्यों के सन्दर्भ में किये गये हैं। इन मानव मूल्यों में मुक्ति की भावना सबसे अधिक है। 'त्यागपत्र' में मृणानल जब अकेली छत पर घन्टों तक बैठा करती थी तब प्रमोद यह अनुभव करने लगता है कि उन्हें अब एकान्त बुरा नहीं लगता। शाम को छत पर खटोला डाले ऊपर उड़ती हुई चीलों को चुपचा देखना, उड़ती हुई पतंग को आँख गाड़े हुए देखना[7] यह सारे दृश्य मुक्ति के प्रति आकर्षण का संकेत है। एकाएक लजाना आदि के प्रसंग में पंग, चिड़िया, पृथ्वी पर अनायास खींचा जाना, शून्य आकाश देखते जाना यह सारी परिस्थितियाँ प्यार, स्वच्छन्द प्यार, उसी ओर की मुक्ति का संकेत है। जैसे जैनेन्द्र की मृणाल व्याकुल है, स्वच्छन्द प्रेम की इन अस्पष्ट तथा व्याकुल स्थितियों में एक ऐसी स्थिति भी आती है जब जैनेन्द्र के स्त्री पात्र अपने प्रिय से सम्बन्ध बोध को निश्चित सम्बन्ध ज्ञान में बांध नहीं पाती है। वह प्रिय को मित्र, भाई, भतीजा, सखा इन सब सम्बन्धों में रखकर भी संतुष्ट नहीं हो पाती और वह उनसे कुछ रहस्यात्मक, कुछ अस्पष्ट सम्बन्ध बोध में बांध कर रहना चाहती है। उदाहरण के लिए 'त्यागपत्र' में जब युवा उस सहेली शीला के घर हो आई थी जहाँ उनके प्रिय (डॉक्टर) से उनकी भेंट हुई थी इसके उपरांत जब युवा प्रमोद से मिलती है तो उनका स्वच्छन्द मन उस स्वच्छन्द प्यार को व्यक्त नहीं कर पाता और ऐसा लगता है कि जो बात प्रमोद से कहती थी कह नहीं पाती थी। ऐसा भी लगता था कि उस समय उनके मन में कुछ नहीं ठहरता था न विचार, न अविचार जैसे भीतर बस हवा हो और मन हलका–फुलका बस उड़–उड़ जाना चाहता हो। वह वे बात हंसती थी और वे बात प्रमोद को पकड़कर इधर–उधर खींचती थी।

मन की ऐसी स्वच्छन्द स्थिति में वस्तुतः संबंध ज्ञान की वास्तविकता जैसे अस्थिर होने लगती है। प्रमोद उस स्थिति में समझ नहीं पा रहा था कि बुआ को क्या हो रहा है, बुआ मुझे अच्छा नहीं लगता, प्रमोद, तू मुझे जीजी कहा कर, जीजी, शैला मुझे जीजी कहती है,'' मैंने कहा – मेरी तो बुआ हो'' मैं नहीं बुआ होना चाहती बुआ! छीः! देख चिड़िया कितनी ऊँची उड़

जाती है मैं चिड़िया होना चाहती हूँ।'' मैंने कहा – चिड़िया?'' बोलीं – हाँ चिड़िया उसके छोटे–छोटे पंख होते हैं, पंख खोल वह आसमान में जिधर चाहे उड़ जाती है क्यों रे, कैसी मौज है! नन्हीं – ससी चिड़िया, नन्ही–सी पूँछ, मैं चिड़िया बनना चाहती हूँ।''[8] इस प्रकार उसके मन में मुक्ति के भाव हैं जो बार–बार उमड़ आते हैं पर वे स्थिर हैं। मन के भाव बताना चाहती शब्द ओठों तक आते हैं पर उन भावों को न बताकर प्रकृति की मुक्ति का चिड़िया के माध्यम से अपनी स्वच्छन्द प्रवृत्ति का संकेत करती हैं। जैनेन्द्र की यह कुशलता है कि मन के भावों की व्यक्ति की एकांकिता में, सही–सही दिखलाना और प्रकट में प्रकृति की मुक्ति का उदाहरण संकेत द्वारा दिखलाना। मानों में बतलाना चाहते हैं कि प्रकृति मुक्त हैं, नग्न है श्लल है। मानव भी जितना प्रकृति की ओर जाएगा उतना ही मुक्त नग्न और श्लील बनेगा। इसलिए मृणाल स्वच्छन्द है। प्रमोद से पूछती है, प्रमोद तू मुझे प्यार करता है?'' सुनकर बिना कुछ बाले मैंने अपना मुँह उनकी छाती के घोंसले में और दुबका लिया। इस पर वह बोली– प्रमोद मैं तुझे प्यार करती हूँ।''[9] ऐसे अनेक उदाहरण 'त्यागपत्र' में स्वच्छन्द प्यार के मिलेंगे जहाँ मृणाल के मानसिक भाव दबे हुए हैं और अस्थिर एवं मुक्त हैं।

'विवर्त' उपन्यास में जैनेन्द्र ने नायिका भुवन मोहिनी के माध्य से जितेन के प्रति उसके स्वच्छन्द प्रेम को आदि से अन्त तक जिस रूप में प्रकट किया है उससे ऐसा लगता है कि इस तरह के प्यार की परिणति वस्तुतः स्त्री के व्यक्तित्व की सार्थकता को प्राप्त करने का प्रयास है। 'विवर्त' की भुवन मोहिनी जितेन से अपने विद्यार्थी जीवन काल से स्वच्छन्द प्रेम करती है। यद्यपि इस चरण में दोनों को यह नहीं पता है कि वह दोनों चाहते क्या हैं। सामने सड़क पर निगाह किए वह बोली – आप क्या चाहते हैं?'' क्या चाहता हूँ।'' जितेन ने हठात् संयम से कहा, क्यों सिनेमा में अपनी सीटें'' – नहीं हैं'' नहीं है! क्यों?'' मैंने रिजर्व नहीं की'' नहीं की? तो यह –यह क्या?'' मोहिनी!'' – आप सिनेमा जाइएगा?'' .... अच्छी बात है, पहुँच जाएगा'' क्या मतलब मोहिनी तुम्हारा कि पहुँच जाइएगा?'' .... अच्छी बात है, पहुँच जाएगा'' क्या मतलब मोहिनी तुम्हारा कि पहुँच जाइगा'' तैश न लाइए, मुझे नहीं जाना है'' शब्द जैसे मोहिनी कह नहीं, फेंक रही थी माथे के आगे और गर्दन के पीछे से उड़ती, लहराती, थिरकती उसकी साड़ी की पटें जैसे जितेन को चुनौती दे रही थी। उसने कहा – मोहिनी तुम्हें क्या हो रहा है? मोहिनी ने निगाह नहीं फेरी। ओठों के कोनों से जरा हंसती–सी बोली – प्रेम!''[10] इस प्रकार के कम शब्दों के कथोपकथन में जैनेन्द्र ने मुक्त प्रेम का वातावरण सही–सही चित्रित किया है, जहाँ प्रेम मुक्त भी है और अस्थिर भी है। मोहिनी के इन छोटे–छोटे वाक्यों से ही पता चलता है कि वह प्रेमातुर भी है और अस्थिर है। मोटर तेज से चलाना, प्रेमनगर में चलना है कहना, आदि अस्थिर मन के भाव हैं। इसी स्थिति में आगे विकास यह होता है कि भुवनमोहिनी का विवाह हो जाता है और जैसे उपन्यासयों के समय रचना से प्रकट है कि जितेन क्रांतिकारी होकर उसके घर लौटता है, उससे प्रकट है कि यह परिणति उनके उसी प्रेम के ही आधार से है।

जिसकी सार्थकता अथवा सम्पूर्णता जिसके एक ओर जितेन को राष्ट्रीय संग्राम में खींचता है, दूसरी ओर भुनमोहिनी सब कुछ देकर अपने प्यार की सार्थकता कर रही है। उदाहरण के लिए अपने सम्पूर्ण समर्पण को ही भुवन मोहिनी अपने उस स्वच्छन्द प्रेम की सार्थकता मांगती है। मोहिनी की क्रांतिकारी जितेन को उस गुप्त निवास स्थान पर लाया जाता है जहाँ जंगल में वह अपने साथियों सहित रह रहा है जहाँ एक ओर जितेन का अहंकार खींचा हुआ है दूसरी ओर स्वच्छन्द प्रेम। इस स्वच्छन्द प्रेम के पीछ असफल प्रेम की आह है इसी कारण मौका पाकर उससे पचीस हजार रुपये मांगता है। Repression की स्थिति है तो मन को या तो क्रान्तिकारी बनाते हैं और चिन्ता से उत्पन्न विकलता, कष्टकारिता, घबराहट आदि स्थितियों से मुक्ति पाने का प्रयत्न करते हैं एवं अन्य में स्वयं उसी स्थिति में मुक्त होने का प्रयत्न करते हैं चाहे उसमें मानसिक हार क्यों न हो पर वे चिंता से मुक्त होना चाहते हैं। जितेन की यही स्थिति है। वह असफल प्रेमी है और अब जंगल में स्वच्छन्द प्रेम का मौका पाते हुए भी मन उदास है, भारी है। हर वक्त मन को कसा रखना ठीक नहीं है, मन को तानकर रखने का तो मतलब है कि दुनिया में प्रकृति है नहीं आदमी ही है, जिससे राग–द्वेष आवश्यक होता है पर खुली प्रकृति भी है, जो हमें ज्यों–का–त्यों लगने को तैयार है।''[11] जितेन चाहता था कि भुवनमोहिनी उसे जैसा है वैसा स्वीकार करे। यपि उसका विवाह नरेश से हुआ पर है पर जितेन से मिलनातुर है। उसके स्वच्छन्द प्यार में जितेन की तरह कोई विकृति नहीं है। अतः उसके साथियों के सामने ही जितेन का हाथ पकड़कर कातर कंठ से उसे निर्दय न बनने को कहती है परन्तु जितेन का अहंकार चरम सीमा में पहुँचा है। मोहिनी ने जितेन के दाहिने हाथ को खींचकर बार–बार मुंह से लगाया, आंखो से लगाया, सारे चेहरे से लगाया और सुबकते–सुबकते कहा–जितेन! जितेन! उठो,'' जितेन ने कहा दरवाजा खुला है, बंद कर दो इतनी नीच बनती हो। इसमें तुम्हें न आए, मुझे शरम आती है।''[12]

स्वच्छन्द प्रेम की एक और परिणपति 'बीते दिन' (व्यतीत) उपन्यास में होती है। इसमें जयंत और अमिता का स्वच्छन्द प्रेम एक ऐसे स्थल पर पहुँचता है जहाँ एक ओर अनिता की ओर से समर्पण है[13] और दूसरी ओर जयन्त की ओर से वह स्वच्छन्द प्यार अहम् की विकृति तक पहुँता है। जयन्त अमिता को इसलिये स्वीकार नहीं करता उसे लगता है कि अमिता का समर्पण नैसर्गिक नहीं बल्कि नियोजित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. जैनेन्द्र कुमार : साहित्य का श्रेय और प्रेय : पृष्ठ 12

2. परख : पृष्ठ 14

3. परख : पृष्ठ 14–15
4. परख : पृष्ठ 15–18
5. वही, पृष्ठ–20
6. वही, पृष्ठ–20
7. त्यागपत्र, पृष्ठ 13–14
8. त्यागपत्र, पृष्ठ 15
9. त्यागपत्र, पृष्ठ 15
10. विवर्त, पृष्ठ 10
11. विवर्त, पृष्ठ 202
12. वही, पृष्ठ 198
13. बीते दिन, पृष्ठ 122, 123